3rd Feb 2022
Thursday

Sonam Bala
Assistant Professor (Guest Faculty)
Dept. of Geography
A.N.D. College, Shahpur Patory, Samastipur
For B.A. - II (Hons)
Paper - III, Geography of India & Bihar

Lecture - 29

Scanned with CamScanner

UNIT-1 BRAHMAPUTRA RIVER & PENINSULAR DRAINAGE SYSTEM

ब्रह्मपुत्र नदी एवं प्रायद्वीपीय अपवाह तंत्र

ब्रह्मपुत्र नदी तंत्र → यह विश्व की सबसे बड़ी नदियों में से एक है।

उद्गम: कैलाश पर्वत श्रेणी में मानसरोवर झील के निकट चेमायुँगडुँग हिमनद

यहाँ से यह पूर्व दिशा में अनुदैर्ध्य रूप में बहती हुई द० तिब्बत के शुष्क व समतल मैदान में लगभग 1200 km की दूरी तय करती है। यहाँ इसे **सांग्पो** के नाम से जाना जाता है जिसका अर्थ है 'शोधक'। तिब्बत के रागोंसांग्पो इसके दाहिने तट पर एक प्रमुख सहायक नदी है। मध्य हिमालय में नमचा बरवा (7,755 m) के निकट एक गहरे गहाखड्ड का निर्माण करती हुई यह एक प्रबुद्ध व तेज बहाव वाली नदी के रूप में बाहर निकलती है। हिमालय के गिरिपद में यह **सियांग/दिरांग** के नाम से निकलती है। अरुणाचल प्रदेश में सादिया कस्बे के प० में यह नदी भारत में प्रवेश करती है। द०-प० दिशा में बहते हुए इसके बाएँ तट पर इसकी प्रमुख सहायक नदियाँ दिबांग या सिकांग और लोहित मिलती हैं और इसके बाद यह नदी ब्रह्मपुत्र के नाम से जानी जाती है।

असम घाटी में अपनी 750 km की यात्रा में ब्रह्मपुत्र में असंख्य सहायक नदियाँ आकर मिलती हैं। इसके बाएँ तट की प्रमुख सहायक नदियाँ बूढ़ी दिहिंग/दिहांग और धनसरी (दक्षिण) है। जबकि दाएँ तट पर

Scanned with CamScanner

मिलने वाली महत्वपूर्ण सहायक नदियों में सुबनसिरी कामेंग, मानस व संकोरा है। सुबनसिरी जिसका उद्गम तिब्बत में है, एक पूर्ववर्ती नदी है। ब्रह्मपुत्र नदी बांग्लादेश में प्रवेश करती है और फिर द० दिशा में बहती है। बांग्लादेश में यह जमुना कहलाती है। तिस्ता नदी इसके दाहिने किनारे पर मिलती है। अंत में यह नदी पद्मा के साथ मिलकर बंगाल की खाड़ी में जा गिरती है। ब्रह्मपुत्र नदी बाढ़ मार्ग परिवर्तन एवं तटीय अपरदन के लिए जानी जाती है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि इसकी अधिकतर सहायक नदियां बड़ी हैं और इनके जलग्रहण क्षेत्रों में भारी वर्षा के कारण इनमें अत्यधिक अवसाद बहकर आ जाता है।

प्रायद्वीपीय अपवाह तंत्र

प्रायद्वीपीय अपवाह तंत्र हिमालयी अपवाह तंत्र से पुराना है। यह तथ्य नदियों की प्रौढ़ावस्था और नदी घाटियों के चौड़ा व उथला होने से प्रमाणित होता है। प० तट के समीप स्थित प० घाट बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली प्रायद्वीपीय नदियों और अरब सागर में गिरने वाली छोटी नदियों के बीच जल-विभाजक का कार्य करता है। नर्मदा और तापी को छोड़कर अधिकतर प्रायद्वीपीय नदियाँ प० से पू० की ओर बहती हैं। प्रायद्वीप के उ० भाग में निकलने वाली चंबल, सिंध, बेतवा, केन व सोन नदियाँ गंगा नदी तंत्र का अंग हैं। प्रायद्वीप के अन्य प्रमुख नदी-तंत्र महानदी, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी है। प्रायद्वीपीय नदियों की विशेषता है कि वे एक सुनिश्चित मार्ग पर चलती हैं, विसर्प नहीं बनाती और वे वारहमासी नहीं हैं, यद्यपि भ्रंश घाटियों में बहने वाली

नर्मदा और तापी इसका अपवाद हैं।

प्रायद्वीपीय अपवाह तंत्र का उद्विकास

अति प्राचीन काल की तीन प्रमुख भूगर्भिक घटनाओं ने आज के प्रायद्वीपीय भारत के अपवाह तंत्र को स्वरूप प्रदान किया है —

① आरंभिक टर्शियरी काल के दौरान प्रायद्वीप के प० पार्श्व का अवतलन या धँसाव जिससे यह समुद्रतल के से नीचे चला गया। इससे मूल जल संभर के दोनों ओर नदी की सामान्यतः सममित योजना में गड़बड़ी हो गई।

② हिमालय में होनेवाले प्रोत्थान के कारण प्रायद्वीप खंड के उ० भाग का अवतलन हुआ और परिणामस्वरूप भ्रंश द्रोणियों का निर्माण हुआ। नर्मदा और तापी इन्हीं भ्रंश घाटियों में बह रही हैं और अपरदन पदार्थ से मूल दरारों को भर रही हैं। इसीलिए इन नदियों में जलोढ़ व डेल्टा निक्षेप की कमी पाई जाती है।

③ इसी काल में प्रायद्वीप खंड उ०-प० दिशा से, द०-पू० दिशा में झुक गया। परिणामस्वरूप इसका अपवाह बंगाल की खाड़ी की ओर उन्मुख हो गया।

प्रायद्वीपीय नदी तंत्र → प्रायद्वीपीय अपवाह में अनेक नदी तंत्र हैं, जिनमें से प्रमुख निम्न हैं —

महानदी → **उद्गम**: छत्तीसगढ़ के रायपुर जिले में सिहावा के निकट निकलती है। फिर ओडिशा से बहती हुई अपना जल बंगाल की खाड़ी में विसर्जित करती है। यह नदी 851 km

Scanned with CamScanner

लंबी है और इसका जलग्रहण क्षेत्र लगभग 1.42 लाख वर्ग km है। इसके निचले मार्ग में नौसंचालन भी होता है। इस नदी की अपवाह द्रोणी का 53% भाग मध्य प्रदेश व छत्तीसगढ़ में 47% भाग ओडिशा राज्य में विस्तृत है।

गोदावरी नदी → गोदावरी, यह सबसे बड़ा प्रायद्वीपीय नदी तंत्र है। इसे दक्षिण गंगा के नाम से जाना जाता है। यह महाराष्ट्र में नासिक जिले से निकलती है। (उद्गम)

यह बंगाल की खाड़ी में जल विसर्जित करती है। इसकी सहायक नदियाँ महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, ओडिशा और आंध्र प्रदेश राज्यों से गुजरती हैं। यह 1465 km लंबी नदी है, जिसका जलग्रहण क्षेत्र 3.13 लाख वर्ग km है। इसके जलग्रहण क्षेत्र का 49% भाग महाराष्ट्र में 20% भाग मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ में और शेष भाग आंध्र प्रदेश में पड़ता है। इसकी मुख्य सहायक नदियों में ~~तमसी~~ पेनगंगा, इंद्रावती, प्राणहिता और मंजरा है। पोलावरम् के द० में जहाँ इसके मार्ग के निचले भागों में भारी बाढ़ें आती हैं, गोदावरी एक सुदृश्य प्रपात की रचना करती है। इसके डेल्टाई भाग में ही नौसंचालन संभव है। राजामुंद्री के बाद यह नदी कई धाराओं में विभक्त होकर एक वृहत डेल्टा का निर्माण करती है।

Scanned with CamScanner